REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 10 | JULY - 2023

त्रिपुरारी शर्मा कृत बहू नाटक : एक अध्ययन

गिरी दीपा व्यंकटगीर
सहशिक्षिका, जि. प. हायस्कुल, वडेपुरी, ता. लोहा, जि. नांदेड.

प्रस्तूत लघु शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित में विभाजित किया है । प्रथम अध्याय में समकालीन महिला नाटककारों का नाटकों में योगदान है । जिसके अंतर्गत समकाजलीन महिला नाटककार और उनके नाटकों का योगदान का विस्तृत अध्ययन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में त्रिपुरारी शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व उजागर किया है । इस अध्याय के अंतर्गत त्रिपुरारी शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया है । त्रिपुरारी शर्मा के जीवन एवं साहित्यिक परिचय की विस्तृतएवं अधिकृत जानकारी देने का प्रयास किया है । उनके साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके नाटकों की मूल-प्रेरणा एवं लक्ष्य का अध्ययन किया गया है ।

तृतीय अध्याय में बहू नाटक में चित्रित समस्याएँ है । इस अध्याय के अंतर्गत बहू नाटक में चित्रित विभिन्न समस्याओं का विस्तूत अध्ययन किया गया है । विपरित भारतीय समाज व्यवस्था की जब हम चर्चाकरते है तब नारी समस्या महत्वपुर्ण मानी जाती है । आज के भागदौड के युग में नारी का शोषण बढता ही जा रहा है । इसी नारी शोषण व्यवस्था को उजागर करने के लिए त्रिपुरारी शर्मा ने बहू नाटक लिखा । इस नाटक का नारी के जीवन में आनेवाली विभिन्न समस्याओं को समाज के सामने उजागर करना यह महत्वपुर्ण उद्देश रहा है ।

चतुर्थ अध्याय में बहू नाटक को रंगमंच की दृष्टि से अध्यायन किया है । इस अध्याय के अंतर्गत मैंने बहू नाटक का रंगपंच को लेकर प्रयोग किस प्रकार हुआ है इसका अध्यायन किया है । नाटक की सार्थकता और नाटककार की सफलता नाटक रंगपंच पर अच्छी तरह से अभिनित होकर प्रेक्षकों तक पहुँचाने में ही है । इस अध्याय में इसी बाज पर प्रकाश डालते हुए रंगमंच का अर्थ को स्पष्ट किया है । इसके साथ ही बहू नाटक रंगमंचीय दृष्टि से कैसे अनुकूल है इसका विस्तृत अध्ययन किया है ।

पंचम अध्याय उपसंहार है । प्रस्तूत अध्याय में समकालीन महिला नाटककारों का नाटकों मे योगदान और महिला नाटककार त्रिपुरारी शर्मा के योगदान का सम्यक मूल्यांकन किया गया है । बहू नाटक में चित्रित विविध समस्याओं का अध्यायन करते हुए अनेक महत्वपुर्ण निष्कर्षे पर पहूँचने का प्रयास किया है । अंत में सभी अध्याय का सार और निष्कर्ष रूप में चित्रित किया है ।

अत : यही कहना चाहती हूँ कि इस लघु शोधकार्य को यद्यपि मैंने एक सिमित समय और सामर्थ्य के भितर यथसंभव समृध्द बनाने का प्रयास किया है । तथापि मैं आपनी सिमाओं से अपरिचित नही हुँ, इसलिए इसकी पुर्णता का दावा तो नही कर सकती, फिर भी यह मेरा प्रयास हिंदी साहित्य में त्रिपुरारी शर्मा के योगदान को समझने और इसके प्रति रूचि जागृत करने में थोडी भी भूमिका निभा सकी तो मैं अपना श्रम सार्थक समझुँगी ।

प्राक्कथन

नाटक के क्षेत्र में मेरी रूचि अधिक रही है । विशेषत: महिला समस्याओं की स्थिति को देखकर मैं काफी विचलित होती थी । इसलिए महिला समस्याओं का अध्ययन करना तथा इसकी गहराई में जाना मेरे लिए आत्मीयत की

बात थी । अत: मैने यह तय किया है ककि शोध कार्य के लिए महिला समस्या को आधार बनाया जाए । त्रिपुरारी शर्मा के नाटक में महिला समस्याओं को नये रूप में प्रस्तुत करने की बात को मैने महसुस किया था । इसलिए मैने त्रिपुरारी शर्मा कृत बहू नाटक : एक अध्ययन विषय का चयन किया ।

समकालीन हिंदी के नाटकों में त्रिपुरारी शर्मा के नाटक अपना अलग एवं विशेष महत्व रखते है । उनके नाटक को पढने से यह स्पष्ट होता है कि, उनके नाटक महिला समस्याओं को समाज व्यवस्था की वास्तविकताओं को उभारने मे सफल हुए हैं । समाज व्यवस्था में जीवन व्यापन करते हुए आम महिलाओं के अभावों एवं विसंगतिपूर्ण जीवन की बडी सटिक अभिव्यक्ति उनके नाटकों में व्यक्त हुई है । ऐसी व्यवस्था को तोडकर नई व्यवस्था को लाने के लिए त्रिपुरारी शर्मा ने सामान्य महिलाओं को प्रेरणा एवं उत्साह दिया है । ऐसी जागृत एवं सचेत महिला नाटककार पर जिना हो सका उतना समझकर मैंने उनका अध्ययन किया है । वैसे त्रिपुरारी शर्मा पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख, शोध आलेख छपे है । किंतू उनके बहू इस नाटक के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर उनके नाटक का अध्ययन बहूत ही कम हुआ है । इसी बात को ध्यान में रखकर मैने मार्गदर्शक प्रा. डॉ. भगवान जाधव से चर्चा कर, त्रिपुरारी शर्मा कृत बहू नाटक : एक अध्ययन इस विषय को लेकर अपना लघु शोध प्रबंध पूर्ण किया है ।

ऋणनिर्देशन

हिंदी की समकालीन महिला नाटककारों में त्रिपुरारी शर्मा का अलग एवं विशिष्ट स्थान है । उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से महिला समस्याओं को जनता के सामने उजागर किया है । उनके समस्त नाटक जनता की आशाओं और आकांक्षाओं अभिव्यक्ति देते है । उनके नाटकों में महिला समस्याएँ कई रूपो मे उभरकर आयी है । इसी बात को ध्यान में रखकर त्रिपुरारी शर्मा कृत बहू नाटक एक अध्ययन यह विषयनिश्चित किया और मार्गदर्शक आदरणीय डॉ, भगवान जाधव से अनुमति लेकर कार्य में जुट गयी । उनके उचित मार्गदर्शन के कारण ही मैं इस लघु शोधकार्य को एक निश्चित रूप दे सकी ।

आदरणीय प्रा. डॉ. भगवान नारायण जाधव सर ने इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ प्रेरित ही नही किया, बल्कि समय पर उचित मार्गदर्शन कर लिखने के लिए साहस भी दिया है । इस कार्य में मैंने उन्हे जो कष्ट दिया उसके लिए मैं उनकी श्रमापार्थी हूँ और ऋणी भी । अपनी व्यस्तता में भी अपना समय देकर आत्मीयतापूर्वक उन्होंने जो मार्गदर्शन किया है उसके लिए मैं उनकी सदैव ऋणी रहूँगी ।

पीपल्स महाविद्यालय के प्राचार्य तथा हिंदी विभाग प्रमूख डॉ. रावसाहेब जाधव सर ने मुझे इस शोधकार्य में अपना योगदान दिया । इसके लिए मैं उनका आभार मानती हूँ । पीपल्स कॉलेज के हिंदी विभाग के प्रा. डॉ. संजय मुनश्वर,डॉ. मुकुंद कवडे, डॉ. संध्यान ठाकुर, डॉ. गिरी बाबू, डॉ शरद कदम, डॉ विलास वानखेडे इन सबकी भ मैं आभारी हुँ । इसी कॉलजे के ग्रंथपाल प्रा. एस. एन. गायकवाउ सर और उनके सहायक एस एम गावंडे सर की भी मैं आभारी हूँ । इन्होंने मुझे हर समय ग्रंथ उपलब्ध कराने में बडी सहायता की है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ.क्र.	लेखक का नाम	किताब का नाम	प्रकाशन
1	त्रिपुरारी शर्मा	बहू	राजकमल प्रकाशन पृ. सं. 1984

सहाय्यक ग्रंथ सूची

अ.क्र.	लेखक का नाम	किताब का नाम	प्रकाशन
1	डॉ भगवान जाधव	हिंदी महिला नाटककार	ए. बी. एस. प्रकाशन प्रथम संस्कारण, 2013.
2	त्रिपुरारी शर्मा	काठ की गाडी	विद्या प्रकाशन मंदिर दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
3	त्रिपुरारी शर्मा	रेशमी रूमाल	शुभकामना प्रकाशन दिल्ली, प्रथम सं. 1989
4	त्रिपुरारी शर्मा	सन सत्तावा का सि ।	अजीजुन निसा वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999

5	डॉ ठाकुर विजय सिंह	निर्मल वर्मा के साहित्य मे नारी	प्रथम संस्करण, 2007
6	डॉ मीना पांड्य	साठोत्तरी हिंदी नाटकों में नारी की दशा और दिशा	भावना प्रकाशन, दिल्ली
7	डॉ लक्ष्मी नारायण लाल	रंगमंच और नाटक की भूमिका	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1965
8	डॉ ओमप्रकाश शर्मा	स्वात्र्योंतर हिंदी नाटक	अतुल प्रकाशन, कानपूर, प्रथम संस्कारण, 1994
9	डॉ. गिरीश रस्तोगी	नाटक तथा रंग परिकल्पना	विश्वविद्यालय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1992.

इस शोधकार्य में मेरे माँ और पिताजी सास, भाई-बहन इस सबकी प्रेरणा और उनका आशीर्वाद तो सदैव मेरे साथ रहा ही है । मैं अपनी पति की ह्रदय से कृतज्ञ हूँ क्योंकि उनके सहयोग बिना यह शोध कार्य पुरा नही हो सकता था । मेरे परिवार के सभी सदस्य मेरे बहने, मेरे भाई, जेठ-जेठानी, ननद ससुरालवाले सभा सदस्य ने मेरे उत्साह बढाया इन सबके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ । मेरे इस शोधकार्य में मेरे परिवार के साथ मेरी सहेलियों ने भी काफी हद तक मदत की है । अंत: में उनके प्रति आभार करना अपना कर्तव्य समझती हूँ ।

इन सबके साथ मेरे शोधकार्य को अर्पित मल्टीसर्व्हीस, डी.टि.पी. टंकलेखन पोर्णिमा नगर, नांदेड के प्रा. डॉ. पाटील सुखदेव सर इनकी भी मैं ऋणी हूँ, जिनके सहयोग के बिना इस लघु शोधप्रबंध को सुव्यवस्थित और सुनियोजित ढंग से टंकलिखित होना संभव नही था ।

प्रस्तूत शोधप्रबंध को पुर्ण करते समय जहाँ तक मेरे अपने विचार और मेरी अध्ययन क्षमता वहाँ तक इस विषय को न्याय देते का मैंने पुरा प्रयास किया है । शोधकार्य करते समय प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जिनका सहकार्य मिला उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हुँ ।